# जादू और मोजिज़े मे फर्क.

मआरिफुल कुरान/१. मुफ्ती शफी उस्मानी रह.

नोट.- ये PDF कोई भाषा या व्याकरण नही हे,
बल्कि दीन-ए-इस्लाम को समझने के लिये हे.

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहिम.

जिस तरह अम्बिया (अल) के मोजिज़ो (अल्लाह की तरफ से नबियो के ज़रिये जाहिर होने वाले करिश्मे और ऐसी बाते जिन्को करने पर दूसरे लोग आजिज़ हो) या औलिया की करामतो से ऐसे वाकियात देखने मे आते हे जो आदतन दुसरो से नही हो सकते, इस्लीये उन्को 'आदत से उपर' या 'खिलाफे आदत' कहा जाता हे. बज़ाहिर जादू से भी ऐसे ही आसार देखने मे आते हे, इस्लीये बाजे जाहिलो को इन दोनो मे धोखा भी हो जाता हे और इस्की वजह से वे जादूगरो की ताज़ीम व तकरीम (सम्मान) करने लगते हे, इस्लीये दोनो का फर्क बयान करना ज़रूरी हे.

सो ये फर्क एक तो असल हकीकत के एतिबार से हे और एक जाहिरी आसार (निशानियो) के एतिबार से. हकीकत का फर्क तो ये हे कि सेहर और जादू से जो चिझे देखने मे आती हे ये असबाब के दायरे से अलग कोई चीज़ नही, फर्क सिर्फ असबाब के ज़ाहिर और छुपे होने का हे, जहा असबाब ज़ाहिर होते हे वे आसार उन असबाब की तरफ मन्सूब किये जाते हे और कोई ताज्जुब की चीज़ नही समझी जाती, लेकिन जहा असबाब छुपे हुए हो तो वो ताज्जुब की चीज़ होती हे और अवाम असबाब के ना जानने की वजह से उस्को

खिलाफे आदत और अनोखी बात समझने लगते हे, हालाकी वास्तव मे वो दूसरे तमाम आदी मामलात की तरह किसी जिन्न, शैतान के असर से होती हे.

एक पत्र बहुत लम्बी दूरी का आज का लिखा हुवा अचानक सामने आकर गिर गया तो देखने वाले इस्को अनोखी बात खिलाफे आदत कहेगे, हालाकी जिन्नात व शयातीन को ऐसे काम और ऐसे मे आमाल करने की ताकत दी गयी हे. उन्का ज़रिया (सब्ब और माध्यम बन्ना) मालूम हो तो फिर कोई खिलाफे आदत और अनोखी बात नही रेहती.

खुलासा ये हे कि जादू से ज़ाहिर होने वाले तमाम आसार तबयी असबाब (साधनो, कारणो और माध्यमो) के माताहत होते हे, मगर असबाब के आंखो से ओज़ल और छुपा होने के सब्ब लोगो को उस्के अनोखा, करिश्माती और खिलाफे आदत होने का धोखा हो जाता हे.

जब्की इस्के उलट मोजिज़ा दर असल डायरेक्ट तौर पर अल्लाह तआला का फेल (काम) होता हे, उस्मे तबयी असबाब का कोई दख्ल नही होता.

हज़रत इब्राहीम (अल) के लिये नमरूद की आग को हक तआला ने फरमा दिया कि इब्राहीम (अल) के लिये ठंडी हो जाये, मगर ठंडी भी इतनी ना हो जिस्से तकलीफ पहुंचे बल्की जिस्से सलामती हासिल हो, इस हुक्मे इलाही से आग ठंडी हो गयी.

आज भी कुछ लोग बदन पर कुछ दवाये इस्तेमाल करके आग के अन्दर चले जाते हे, वो मोजिज़ा नही बल्की दवाओ का असर हे, दवाये आंखो से छुपी होने से लोगो को धोखा हो जाता हे और वे

उस्को खिलाफे आदत और करिश्मा व चमत्कार समझने लगते हे.

ये बात कि मोजिला डायरेक्ट हक तआला का फेल होता हे खुद कुराने करीम की वज़ाहत से साबित हे.

इरशाद फरमाया- "कंकरियो की मुट्ठी जो आपने फेंकी, वास्तव मे आपने नही फेंकी बल्की अल्लाह ने फेंकी हे." (७/१७).

मुराद ये हे कि कंकर और खाक की एक मुट्ठी सारे मजमे की आंखो तक पहुंच जाना, इस्मे आपﷺ के अमल को कोई दखल नही, ये खालिस हक तआला का काम हे. ये मोज़िला बदर की लडाई मे पेश आया था कि आपﷺ ने एक मुट्ठी खाक और कंकरियो की काफिरो के लश्कर पर फेंकी (जो सब की आंखो मे पड गयी).

मोजिज़े और जादू की हकीकतो का ये फर्क कि मोजिज़ा तबयी असबाब के बगैर अप्रत्यक्ष रूप से डायरेक्ट हक तआला का फेल होता हे और जादू तबयी असबाब के छुपे होने का असर होता हे, हकीकत समझने के लिये तो पूरी तरह काफी हे, मगर यहां एक सवाल ये रेह जाता हे कि आम लोग इस फर्क को कैसे पेहचाने, क्युकी ज़ाहिरी सूरत दोनो की एक सी हे. इस्का जवाब ये हे कि अवाम के पेहचानने के लिये भी हक तआला ने कई फर्क ज़ाहिर कर दिये हे.

अव्वल ये कि मोजिज़ा या करामत ऐसे हज़रात से ज़ाहिर होती हे जिन्का तकवा, पवित्रता व पाकीज़गी, अख्लाक व आमाल को सब देखते हे. इस्के उलट जादू का असर सिर्फ ऐसे लोगो के जरिये जाहिर होता हे जो गन्दे, नापाक, अल्लाह के नाम और उस्की इबादत से दूर रेहते हे, ये चीज़ हर इन्सान आंखो से देखकर मोजिज़े और

जादू मे फर्क पेहचान सकता हे.

दूसरे ये कि अल्लाह की आदत और कानून ये भी जारी हे कि जो शख्स मोजिज़े और नुबुवत का दावा करके कोई जादू करना चाहे उस्का जादू नही चलता, हा नुबुवत के दावे के बगैर कोई करे तो चल जाता हे.

**क्या नबियो पर भी जादू का असर हो सकता हे?**

जवाब ये हे कि हो सकता हे. वजह वोही हे जो उपर बतलायी गयी कि जादू दर हकीकत तबयी असबाब ही का असर होता हे और अम्बिया (अल) तबयी असबाब के असरात से प्रभावित होते हे. उन्का ये असर लेना उन्की नुबुवत की शान के खिलाफ नही. जैसे उन्का भूख प्यास से प्रभावित होना, बीमारी मे मुब्तला होना और शिफा पाना ज़ाहिरी असबाब से सब जानते हे, इसी तरह जादू के अन्दरूनी असबाब से भी अम्बिया (अल) प्रभावित और पीडित हो सकते हे और ये प्रभावित होना उन्की शाने नुबुवत के खिलाफ नही.

रसूलुल्लाहﷺ पर यहूदियो का जादू करना और उस्की वजह से आप पर कुछ आसार (निशानियो) का ज़ाहिर होना और वही के माध्यम से उस जादू का पता लगना और उस्को दूर करना सही हदीसो मे साबित हे. और हज़रत मूसा (अल) का जादू से मुतास्सिर (प्रभावित) होना खुद कुराने करीम मे बयान हुवा हे.

देखिये ये आयते- मूसा (अल) पर खौफ तारी होना उस जादू ही का तो असर था. (२०/६६-६७).